ज़िन्दगी ए बाजार

डा. कंचन जैन "स्वर्णा"

चल 'वक्त ए बाजार' लगा है,
चल कुछ 'वक्त' ढूंढते हैं।
कुछ तुम खरीदो,
कुछ हम खरीदते हैं।
देखेंगे नीयतें कितनी सस्ती बिकती हैं,
कुछ तुम खरीदो, कुछ हम खरीदते हैं।
बिक रही हैं,
इन्सानियत यूं ही बाजार में।
सज रही हैं,
जज़्बात ए स्याही निलामी के बाजार में।
चल,
कुछ मिल जाए तो,हम भी खरीद लेंते हैं।
कुछ उधार के सिक्कों सा,
"मन" भी जो बिक रहा हो।
बाजार में,
"सुकून" की जायदाद का हिस्सा कुछ हाथ में ले कर चल।
चल कुछ नहीं तो,
थोड़ी मुस्कान ही खरीद लेंगे,
हंसी तो बहुत महंगी है,
बाजार में,
थोड़ा मिल रहा हो, "यकीन" तो देख।
कीमत कितनी है।
कहीं गिर न रही हो,
तेरे हाथ से मासूमियत।
जरा संभालकर कर पकड़।
चल चलते हैं, "तलाश" में,

Scanned with OKEN Scanner

"ज़िन्दगी" की "बोली" की कीमत,
जो धीरे-धीरे निकल रही है,
हाथ से।
अपने आपको इकठ्ठा कर और चल,
बहुत बिखरा हुआ है, तेरा मन।
चल उठा और चल,
ज़िन्दगी ए बाजार लगा है,
इन्सानियत ढूंढते हैं।
कुछ तुम खरीदो,
कुछ हम खरीदतें हैं।

Scanned with OKEN Scanner